अलाउद्दीन खिलजी की मूल्य निर्धारण नीति का परीक्षण करें ?

अलाउद्दीन खिलजी वंश का महानतम शासक था उसका 20 वर्षीय शासनकाल महत्वपूर्ण उपलब्धियों का काल था। अलाउद्दीन का बचपन का नाम अली तथा गुरुशास्प था। वह दिल्ली सल्तनत के शासकों में सबसे महान था। उसका 20 वर्षीय शासनकाल महत्वपूर्ण उपलब्धियों का काल था। उसने राजस्व को एक नया रूप प्रदान किया महत्वपूर्ण राजनैतिक सुधार लागू किए लगान प्रशासन और व्यापार वाणिज्य में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया तथा सल्तनत को एक विशाल साम्राज्य का रूप प्रदान किया। अलाउद्दीन एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। वह चाहता था कि ऐसा कार्य करे जिससे उनका नाम विश्व इतिहास में अमर हो जाए।

अलाउद्दीन के सुधारों में सबसे अधिक महत्व उसकी मूल्य निर्धारण योजना अथवा बाजार नियंत्रण की नीति का है। के० एस० लाल ने कहा की यह योजना कम खर्ची पर विशाल सेना को बनाए रखने के लिए लागू की गई अब यह अनिवार्य हो गया कि उस निर्धारित वेतन में ही सैनिकों को सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराई जाएँ अन्यथा उनमें असंतोष फैलता। अतः कहा गया की बाजार नियंत्रण की योजना इसलिए लागू की गई।

लेकिन सक्सेना, हबीब के इस विचार से सहमत नहीं है। इनके अनुसार अलाउद्दीन ने योजना मात्र सैनिकों के लिए नहीं बल्कि सारी प्रजा के लिए लागू की। उसने सभी आम लोगों की आवश्यक की वस्तुओं के मूल्यों को भी निर्धारित किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि बाजार नियन्त्रण और वस्तुओं के मूल्यों को निर्धारित करने में अलाउद्दीन का एकमात्र उद्देश्य राजनीतिक था। एक बड़ी सेना रखना अपने सैनिकों को एक निश्चित और नकद वेतन देकर उनकी जीवन की सुविधाएँ उपलब्ध कराना और इन उद्देश्य की पूर्ति के लिए वस्तुओं के मूल्यों की को बढ़ने से रोकना उनका मुख्य उद्देश्य था तथा बाजार - नियन्त्रण इन उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक साधन।

सभी प्रकार के अनाज, दाले कपड़ा गुलाम अथवा घोड़े यही नहीं वरन् सब्जी, मेवा, मांस, मछली

गन्ना, रुई, धागा, तेल आदि जैसी दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के मूल्य भी निर्धारित किये गये। गल्ले के लिए मण्डी कपड़े के लिए ~~सराय - ए - आदिल~~ दैनिक जीवन के उपभोग की अन्य वस्तुओं के लिए एक पृथक् बाजार निश्चित किया गया। कठिनाई के अवसरों पर सुरक्षा के लिए सरकारी गोदामों में सभी आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करने की व्यवस्था की गयी थी और ऐसी परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक वस्तुओं के खरीदने की सीमा निश्चित की गयी थी।

योजना कार्यान्वित करने के लिए अलाउद्दीन ने एक नए विभाग का गठन किया जिसे दीवाने-रियासत नाम दिया गया। यह वाणिज्य विभाग था तथा इसका प्रधान सदे-रियासत कहा जाता था। इस विभाग के अधीन प्रत्येक बाजार के लिए निरीक्षक को नियुक्त किया गया। इन्हें शहना कहते थे जो योजना लागू करने के लिए उत्तरदायी थे। गुप्तचर अथवा बरीद को भी नियुक्त किया गया बाजार की गतिविधियों को देखने के लिए। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन स्वयं भी अपने दासों और अन्य व्यक्तियों द्वारा समय-2 पर बाजार से सामान ~~माँगा~~ मँगा कर अपनी सन्तुष्टि करता था। वस्तुएँ केवल निश्चित मूल्य पर बेची जा सकती थी। यहाँ तक कि बड़े से बड़ा पदाधिकारी भी सुल्तान की आज्ञा के बिना मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता था। कम तोलने वाले के शरीर से उतनी ही मात्रा में माँस ~~क~~ काट लिया जाता था। कोई भी व्यक्ति (व्यापारी या किसान) किसी भी वस्तु का संग्रह नहीं कर सकता था। सट्टेबाजी और चोरबाजारी प्रवृतियाँ समाप्त कर दी गयी थी। आदेशों के उल्लंघन करने वाले व्यापारियों के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान था। सट्टेबाजी और चोरबाजारी प्रवृत्तियां समाप्त कर दी गयी थी।

बरनी के अनुसार अलाउद्दीन ने निम्नलिखित बाजार स्थापित किए।

मण्डी - जहाँ अनाज का व्यापार होता था।

सराय-अदल - जहाँ वस्त्र का व्यापार होता था।

दास, घोड़ों और मवेशियों एवं अन्य वस्तुओं के लिए सामान्य बाजार।

उसने विभिन्न वस्तुओं के

लिए मूल्य निर्धारित कर दिए। गेहूँ 7½ जीतल प्रति मन, चावल 5 जीतल प्रतिमन, जौ 4 जीतल प्रति मन, चना 5 जीतल प्रति मन आदि मूल्य निर्धारित हुए। कपड़े में रेशमी वस्त्र सोलह टंका से लेकर दो टंका के बीच बिकते थे जबकि सूती कपड़े 3½ जीतल से 6 जीतल के बीच बिकते थे। उत्तम श्रेणी के घोड़े 100 से 120 टंका एवं सामूली टट्टू 10 से 25 टंका में बिकते थे। दासों का मूल्य 5 से 40 टंका के बीच था।

मंडी में अनाज की आपूर्ति के लिए अलाउद्दीन ने लगान की वसूली अनाज के रूप में करने का आदेश दिया। इसके अतिरिक्त उसने किसान से निजी आवश्यकता से अधिक अनाज निर्धारित मूल्य पर खरीदने का आदेश दिया। अलाउद्दीन की यह व्यवस्था केवल दिल्ली तक ही सीमित थी अधिकांश आधुनिक इतिहासकार इसी मत को स्वीकार करते हैं।

वस्त्र बाजार में विदेशों से आयात किए गए रेशमी कपड़ों का मूल्य निर्धारित करना कठिन था। अतः अलाउद्दीन ने मुल्तानी व्यापारियों को राज्य द्वारा ऋण प्रदान किया ताकि वे व्यापारियों से उपलब्ध मूल्य पर कपड़े खरीदें और उसे बाजार में लाकर निर्धारित मूल्य पर बेच दें।